بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ o

# الحمد للّٰہ

1.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ o [الفاتحة:1] तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है

2.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَافِی السَّمٰوٰتِ وَمَافِی الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ

وَهُوَالْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ o [سبا:1]

तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है उसी के लिए है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है और आख़िरत में(भी)उसी के लिए तारीफ़ है इस हाल में कि वो बहुत हिक्मत वाला,बहुत ख़बर रखने वाला है-

3.فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ وَرَبِّ الْعٰلَمِیْنَ o وَلَهُ الْكِبْرِیَآءُ فِی

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ص وَهُوَالْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ o [الجاثية:36,37]

पस अल्लाह ही के लिए सारी तारीफ़ है जो आसमानों का रब है,ज़मीन का रब है और तमाम जहानों का रब है-और उसी के लिए ही आसमानों और ज़मीन में बड़ाई है और वो निहायत ज़बरदस्त बहुत हिक्मत वाला है-

4.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ. [سنن ابن ماجة:3803]

सब तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जिसके फ़ज़्ल व इनआम से तमाम नेक काम अन्जाम पाते हैं-

5.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ. [سنن ابن ماجة:3803] हर हाल में अल्लाह की तारीफ़ है

6.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِیْرًا طَیِّبًا مُّبَارَكًا فِیْهِ مُبَارَكًا عَلَیْهِ كَمَا یُحِبُّ رَبُّنَا وَیَرْضٰى.

[سنن أبي داؤد:773]

सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है.जिसमें बहुत ज़्यादा,पाकीज़ा बहुत बाबर्कत तारीफ़-(ये तारीफ़)उसी तरह मुबारक जिस तरह हमारा रब पसंद करता है और वो राज़ी होता है-

7.اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا فِی

السَّمٰوَاتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ مَا اَحْصٰى كِتَابُهُ، وَالْحَمْدُ لِلّٰه عَلٰى مَا

اَحْصٰى كِتَابُهُ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَدَدَ كُلِّ شَیْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ مِلْءَ كُلِّ شَیْءٍ.

[صحيح الجامع الصغير وزيادته:2615]

अल्लाह की तारीफ़ उसकी मख़्लूक़ की तादाद के बराबर,अल्लाह की तारीफ़ जिस से इसकी मख़्लूक़ भरजाऐं, अल्लाह की तारीफ़ उन चीज़ों की तादाद के बराबर जो आसमानों और जो ज़मीन में है,अल्लाह की तारीफ़ उन चीज़ों की गिन्ती के बराबर जिन्हें उसकी किताब ने शुमार किया,अल्लाह की तारीफ़ उसपर जो उसकी किताब ने शुमार किया,अल्लाह की तारीफ़ हर चीज़ की गिन्ती के बराबर और अल्लाह की तारीफ़ जिससे हर चीज़ भरजाए

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

8.اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کُلُّهُ، وَاِلَیْکَ یَرْجِعُ الْاَمْرُ کُلُّهُ.[صحیح الترغیب والترهیب:1576]

ऐ अल्लाह ! तेरे ही लिए सब तारीफ़ है और तेरी ही तरफ़ सब काम लौटते हैं-

9.اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ مِلْءَ السَّمَوَاتِ وَمِلْءَ الْاَرْضِ وَمِلْءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَیْءٍ بَعْدُ اَهْلَ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ لَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَیْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا یَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْکَ الْجَدُّ.[صحیح مسلم:1058]

ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे रब ! तेरे ही लिए हर क़िस्म की तारीफ़ है जिससे कि आसमान भरजाऐं और ज़मीन भरजाए और इसके बाद हर वो चीज़ जिसे तू चाहे कि वो भरजाए-(तू)तारीफ़ और बुज़ुर्गी के लायक़ है जो तूने अता फ़रमा दिया उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तूने रोक लिया उसे कोई अता करने वाला नहीं और किसी साहिबे हैसियत को उसकी हैसियत तेरे यहाँ कोई फ़ायदा नहीं दे सकती-

10.اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَیِّمُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ لَکَ مُلْکُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِیْهِنَّ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِکُ السَّمٰوَاتِ وَالْاَرْضِ وَلَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُکَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُکَ حَقٌّ وَقَوْلُکَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنَّبِیُّوْنَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ ﷺ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ.[صحیح البخاری:1120]

ऐ अल्लाह ! हर तरह की तारीफ़ तेरे ही लिए है,तू आसमानों और ज़मीन और इनमें रहने वाली तमाम मख़्लूक़ का संभालने वाला है-तेरे ही लिए तारीफ़ है,आसमानों और ज़मीन और इनके दर्मियान की तमाम चीज़ों पर हुकुमत तेरे ही लिए है-तेरे ही लिए तारीफ़ है,तू आसमानों और ज़मीन का नूर है-तेरे ही लिए तारीफ़ है, तू आसमानों और ज़मीन का बादशाह है-तेरी ही तारीफ़ है,ततू सच्चा है,तेरा वादा सच्चा है,तेरी मुलाक़ात बरहक़ है,तेरी बात सच्ची है,जन्नत बरहक़ है,दोज़ख़ बरहक़ है,तमाम नबी सच्चे हैं,मोहम्मद ﷺ सच्चे हैं और क़यामत बरहक़ है-

11.اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ کُلُّهُ اَللّٰهُمَّ لَا قَابِضَ لِمَا بَسَطْتَ وَلَا مُقَرِّبَ لِمَا بَاعَدْتَ وَلَا مُبَاعِدَ لِمَا قَرَّبْتَ وَلَا مُعْطِیَ لِمَا مَنَعْتَ وَلَا مَانِعَ لِمَا اَعْطَیْتَ اَللّٰهُمَّ ابْسُطْ عَلَیْنَا مِنْ بَرَکَاتِکَ وَرَحْمَتِکَ وَفَضْلِکَ وَرِزْقِکَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ النَّعِیْمَ الْمُقِیْمَ الَّذِیْ لَا یَحُوْلُ وَلَا یَزُوْلُ .اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ النَّعِیْمَ یَوْمَ الْعَیْلَةِ وَالْاَمْنَ یَوْمَ الْحَرْبِ اَللّٰهُمَّ عَائِذًا بِکَ مِنْ سُوْءِ مَا اَعْطَیْتَنَا وَشَرِّ مَا مَنَعْتَ مِنَّا.[الأدب المفرد:699]

ऐ अल्लाह सारी की सारी तारीफ़ तेरे ही लिए है,ऐ अल्लाह ! जो तू फैलादे उसे कोई समेटने वाला नहीं,जो तू दूर करदे तो कोई उसे नज़दीक करने वाला नहीं,जिसे तू नज़दीक करदे तो कोई उसे दूर करने वाला नहीं,जिससे तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं और जिसे तू दे उसको कोई रोकने वाला नहीं-ऐ अल्लाह ! हमपर अपनी बरकात,अपनी रहमत,अपने फ़ज़ल और अपने रिज़्क़ को फैलादे-ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझसे ऐसी नेअमतें माँगता हूँ जो हमेशा क़ायम रहें ना(तेरी अताअत में)हाइल हों और ना ज़ाइल हों-ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझसे तंगी के दिन नेअमत और जंग के दिन अमन का सवाल करता हूँ-ऐ अल्ला ! तेरी पनाह में आते हुए उस चीज़ की बुराई से जो तूने हमें अता की और उस चीज़ के शर से जो तूने हमसे रोकली-

12.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُکَ بِاَنَّکَ لَکَ الْحَمْدَ،لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ،بَدِیْعُ السَّمَاوَاتِ وَالْاَرْضِ، یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ! یَاحَیُّ! یَاقَیُّوْمُ! اِنِّیْ اَسْاَلُکَ.[سنن النسائی:1300]

ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तुझसे इस वजह से सवाल करता हूँ कि तेरे लिए ही सारी तारीफ़ है,तेरे सिवा कोई माअबूदे हक़ीक़ी नहीं,एहसान करने वाले,आसमानों और ज़मीन को ईजाद करने वाले,ऐ बुज़ुर्गी व इज़्ज़त वाले,ऐ ज़िन्दा,ऐ क़ायम रहने वाले,बेशक मैं तुझसे सवाल करता हूँ-

13.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِکَ وَتَحَوُّلِ عَافِیَتِکَ وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِکَ وَجَمِیْعِ سَخَطِکَ.[صحیح مسلم:6943]

ऐ अल्लाह ! बेशक मैं तेरी पनाह लेता हूँ तेरी नेअमत के ज़वाल से,तेरी आफ़ियत के पलटने से,तेरी सज़ा के अचानक वारिद होने से और तेरी तमाम नाराज़गियों से-

14.اَللّٰهُمَّ اَعُوْذُ بِرِضَاکَ مِنْ سَخَطِکَ وَبِمُعَافَاتِکَ مِنْ عُقُوْبَتِکَ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنْکَ لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَیْکَ اَنْتَ کَمَا اَثْنَیْتَ عَلٰی نَفْسِکَ.[صحیح مسلم:90]

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी नाराज़गी से तेरी रज़ामंदी की और तेरी सज़ा से तेरी माफ़ी की पनाह में आता हूँ-मैं तुझसे(डरकर) तेरी ही पनाह में आता हूँ-मैं तेरी तारीफ़ करने की ताक़त नहीं रखता,तू वैसा ही है जैसा कि तूने ख़ुद अपनी सना बयान की है-

15.رَبِّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ.[سنن النسائی:1304]

ऐ अल्लाह ! अपना ज़िक्र करने,अपना शुक्र करने और बेहतरीन अंदाज़ में अपनी इबादत करने में हमारी मदद फ़रमा-

16.رَبِّ اَعِنِّیْ وَلَا تُعِنْ عَلَیَّ،وَانْصُرْنِیْ وَلَا تَنْصُرْعَلَیَّ،وَامْکُرْ لِیْ وَلَا تَمْکُرْعَلَیَّ، وَاهْدِنِیْ وَیَسِّرْهُدَایَ اِلَیَّ،وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ بَغٰی عَلَیَّ،اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ لَکَ شَاکِرًا،لَکَ ذَاکِرًا،لَکَ رَاهِبًا،لَکَ مِطْوَاعًا،اِلَیْکَ مُخْبِتًا،رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِیْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِیْ وَاَجِبْ دَعْوَتِیْ وَثَبِّتْ حُجَّتِیْ وَاهْدِ قَلْبِیْ وَسَدِّدْ لِسَانِیْ وَاسْلُلْ سَخِیْمَةَ قَلْبِیْ.[سنن أبی داؤد:1510]

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ऐ मेरे रब ! मेरी मदद फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ किसी की मदद ना कर,मेरी नुसरत फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ किसी की नुसरत ना कर-मेरे हक़ में तदबीर फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ तदबीर ना कर-मुझे हिदायत दे और मेरी हिदायत मेरे लिए आसान फ़रमादे-जो मेरे ख़िलाफ़ बग़ावत करे उसके मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा-ऐ अल्लाह ! मुझे अपना शुक्र करने वाला,अपना ज़िक्र करने वाला,तुझी से डरने वाला,तेरा फ़रमाबरदार और तेरी तरफ़ बहुत ही तवाज़ो करने वाला बनादे-ऐ मेरे रब ! मेरी तौबा क़ुबूल करले,मेरे गुनाहों को धो डाल,मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा,मेरी हुज्जत क़ायम फ़रमादे,मेरे दिल को हिदायत दे,मेरी ज़बान को हक़ पर क़ायम रख और मेरे दिल को मेल कुचेल(बुग़्ज़,हसद और कीना वग़ैरा) को निकालदे-

17. رَبَّنَااَصْلِحْ بَيْنِنَا،وَاهْدِنَا سُبُلَ الْإِسْلَامِ، وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَاصْرِفْ عَنَّاالْفَوَاحِشَ مَاظَهَرَمِنْهَا وَمَا بَطَنَ، وَبَارِكْ لَنَا فِيْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَاوَقُلُوْبِنَاوَاَزْوَاجِنَاوَذُرِّيَّاتِنَا،وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ، وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَائِلِيْنَ بِهَاوَاَتْمِمْهَا عَلَيْنَا.[الأدب المفرد:630]

ऐ हमारे रब ! हमारे दर्मियान इसलाह फ़रमा,हमें इस्लाम के रास्तों पर चला और हमें अंधेरों से रोशनी की तरफ़ निजात देदे-हमसे ज़ाहिरी व बातिनी बेहयाईयों को फेरदे और हमारे लिए हमारे कानों,हमारी आंखों,हमारे दिलों, हमारे अज़वाज और हमारी औलादों में बरकत अता फ़रमा,हमारी तौबा क़ुबूल फ़रमा क़योंकि तू बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला,बहुत मेहरबान है,हमें अपनी नेअमतों का शुक्र गुज़ार बना,उसकी तारीफ़ करने वाला बना, उसका क़ाइल (ज़बान से बयान करने वाला)बनादे और उनको हम पर मुकम्मल फ़रमा-

18.سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ.[صحيح مسلم:6847]

पाक है अल्लाह,सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है,अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं और अल्लाह सबसे बड़ा है-

19 . سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّايَصِفُوْنَoوَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ oوَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَo[الصّٰفّٰت:182-180]

आपका रब(जो)इज़्ज़त का रब है हर उस चीज़ से पाक है जो वो बयान करते हैं-और सलाम हो रसूलों पर,और तमाम तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है-

**AlHuda Welfare Trust India**

Post Box Number 444

Basavanagudi Bangalore 560004 ,India

Landline: +918040924255. | official email: alhuda.india@gmail.com | Mobile phone: +91-9535612224

**www.alhudapublications.org.**

**www.alhudapk.com** **www.farhathashmi.com**

AL-HUDA Publications (Pvt) Ltd.